बाइबल टीचर

वर्ष 20 | जून 2023 | अंक 7

सम्पादकीय

एक दूसरे से प्रेम रखो
(यूहन्ना 13:35)

बाइबल बार-बार यह सिखाती है कि हमें यानि मसीही लोगों को आपस में प्रेम रखना चाहिए। आज हम सबको यह सीखने की आवश्यकता है कि मसीह की कलीसिया को यीशु ने यही सिखाया था कि आपस में प्रेम रखो। यूहन्ना मसीही भाईयों को लिखता है ''हे प्रियो हम आपस में प्रेम रखें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है, और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं'' (1 यूहन्ना 4:7-9), उसके बाद वह कहता है कि ''प्रेम इसमें नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया तो, हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।'' (पद 10-11)।

बाइबल मसीहीयों को यह सिखाती है कि उन्हें आपस में प्रेम रखना चाहिए। परन्तु अक्सर यह देखा जाता है कि छोटी-छोटी बातों में मसीहीयों में मतभेद हो जाते हैं। कलीसिया के लोगों को प्रेम में रहकर एक दूसरे की उन्नति के लिये कार्य करना चाहिएं और पौलूस ने यह शिक्षा दी थी कि ''सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध से आत्मा की एकता रखने का यत्न करो'' (इफि. 4:2-3)। कई बार जरा सी मूर्खता के कारण अच्छा से अच्छा भाई-चारा भी टूट जाता है। कलीसिया के सब मसीही भाई बहनों को यह सीखने की आवश्यकता है कि आपस में प्रेम के साथ कैसे रहना चाहिए।

कोरिन्थ में जो मसीह की कलीसिया थी वहां आपस में बहुत मतभेद थे। पौलूस

ने भी वहां उन्हें डांट लगाई कि आपस में उन्हें कैसे रहना है? वहां मसीहीयों को आत्मिक वरदान दिये गये थे और कई सदस्य अपने वरदान से घमण्ड में आकर फूल गए थे। प्रेरित पौलूस ने उनसे कहा तुम जो आपस में लड़-झगड़ रहे हो वो गलत है (1 कुरि. 12)। मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूं। (1 कुरि. 12:31)। और 1 कुरि. 13 अध्याय में वह उन्हें बताता है कि यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलू और प्रेम न रखुं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झन-झनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूं और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखुं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालो को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं और प्रेम न रखुं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है, प्रेम डाह नहीं करता, प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। (1 कुरि. 13:1-6)।

कलीसिया में यदि मसीहीयों के बीच प्रेम होगा तो हमारी बहुत सारी समस्याएं हल हो जाएगी। कई लोग बहुत अच्छे-अच्छे प्रचार तो करते हैं, परन्तु समय आने पर प्रेम को भूल जाते हैं। यीशु जो हमारा गुरू है उसकी शिक्षा को भूल जाते है। उसने अपने लोगों को प्रेम का पाठ सिखाया था। यीशु ने कहा था, कि ''मै तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखों, जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।'' (यूहन्ना 13:34)।

हम लोगों को खरे वचन की शिक्षा देते हैं क्योंकि परमेश्वर ने यह आज्ञा दी है कि हम वचन का प्रचार करें, परन्तु यह सब प्रेम से होना चाहिए। पौलूस ने मसीहीयों को कहा था ''बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हए सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढते जाएं।'' (इफि. 4:15)। आज कलीसिया के लिये प्रेम बहुत जरूरी है। कई बार कलीसिया में भाईयों के बीच में विवाद खड़े हो जाते है परन्तु जो मसीही समझदार है वे आपस में बातों को प्रेम से सुलझा लेते है।

यदि कुछ लोग हमारी बातों से या शिक्षा से सहमत नहीं हैं तो उनसे घृणा मत कीजिये बल्कि प्रेम से उन्हें सिखायें। कलीसिया में कुछ ऐसे लोग भी होते है जिनके अनुचित व्यावहार से कई लोगों को चोट पहुचती है। ऐसा नहीं होना चाहिए। आपने लोगों को अक्सर यह कहते हुए, सुना होगा कि परमेश्वर प्रेम है परन्तु क्या आप उस प्रेम को लोगों के प्रति दिखाते हैं? हमारी ऐसी आशा है कि मसीही भाई आपस में प्रेम से रहें तथा जो लोग मसीह से दूर है और अपने पापों में खोए हुए उन्हें सुसमाचार के द्वारा मसीह के पास लाएं। पढ़िये (1 कुरि. 13:8-13)।

धन का धोखा

सनी डेविड

प्रभु यीशु की अनेक शिक्षाओं में बीज बोनेवाले का दृष्टान्त बड़ा ही प्रसिद्ध तथा शिक्षाप्रद है। इस दृष्टान्त के द्वारा यीशु ने अपने सुनने- वालों को सिखाया, कि परमेश्वर का वचन सुन लेना ही बहुत नहीं है। परन्तु विशेष बात यह है कि हम उसके वचन को कैसे सुनते है? इस दृष्टान्त में यीशु ने चार प्रकार के सुननेवालों पर प्रकाश डाला है। और जब उसके चेले इस दृष्टान्त को समझने के लिये उसके पास आए, तो यीशु ने उन से कहा, कि, ''जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है, यह वही है जो मार्ग के किनारे बोया गया था। और जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है। जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता। जो अच्छा भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।'' (मत्ती 13:19-23)।

यहां मैं आप का ध्यान आज विशेष रूप से इस बात पर दिलाना चाहता हूं कि धन का धोखा वचन को दबाता है। अर्थात् वह वचन को छिपा देता है, उस पर परदा डाल देता है। जिसके कारण मनुष्य उन वस्तुओं को नहीं देखता जो सच्ची और अनन्त हैं, और जिनके महत्त्व को परमेश्वर मनुष्य को सिखाना चाहता है। परन्तु धन के धोखे में आकर मनुष्य उन वस्तुओं को महत्व देने लगता है। जो नाशमान् हैं, सांसारिक और इस जगत की हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, कि इसमें स्वयं धन का कोई दोष है। क्योंकि धन का स्वभाव उस मनुष्य के स्वभाव पर निर्भर करता है जिसके पास धन है। जिस प्रकार निर्धन होने के कारण कोई मनुष्य धर्मी नहीं बन जाता। उसी प्रकार धनी होने के कारण मनुष्य अधर्मी नहीं बन जाता। परन्तु विशेष बात यह है, कि धन के प्रति मनुष्य का व्यवहार क्या है? धन उस समय एक धोखा बन जाता है जब मनुष्य उससे प्रेम करने लगता है, और उस पर भरोसा करने लगता है, और उसका उपयोग सदगुण तथा परमेश्वर की महिमा करने के विपरीत अपनी अभिलाषाओं की तृप्ति के लिये करने लगता है। इस बात को ठीक से समझने के लिये यह आवश्यक है कि आज हम अपने पाठ में बाइबल में लिखे उन तीन उदाहरणों के ऊपर गौर करें, जो हमें तीन ऐसे धनी मनुष्यों के बारे में मिलते है जिन्हों ने धन के धोखे में आकार अपने आप को खो दिया है।

इस सम्बन्ध में सबसे पहिला उदाहरण हम एक धनी नवयुवक के विषय देखते हैं। बाइबल हमें बताती है, कि एक बार जब यीशु मार्ग में जा रहा था, तो वह मनुष्य दौड़ता हुआ उसके पास आया, और यीशु के आगे घुटने टेक कर उसने यीशु से यह महत्वपूर्ण

प्रश्न पूछा, कि हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं? तब, लिखा है, कि ''यीशु ने कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक है अर्थात परमेश्वर।'' किन्तु ''तू आज्ञाओं को तो जानता है; हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। उस ने उस से कहा, हे गुरू इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं। यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है : जो, जो कुछ तेरा है उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।'' परन्तु, ''इस बात से उस के चहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।'' (मरकुस 10:17-22)

यहां से जो बात हम सीखते है वह बिल्कुल स्पष्ट है। अर्थात यहां हमारे सामने एक ऐसा मनुष्य है जो बड़ा ही चरित्रवान् है। एक ऐसा मनुष्य जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलने में प्रयत्नशील है। और एक ऐसा मनुष्य जिसने अपने शरीर की अभिलाषाओं पर काबू पा लिया था कि वह एक अच्छा नैतिक जीवन व्यतीत कर रहा था। परन्तु वह अपने मन पर काबू न पा सका। वह परमेश्वर से भी अधिक अपने धन से प्रेम करता था। उसे अनन्त जीवन से भी अधिक प्रिय अपना धन था। सो वह प्रभु के पास से उदास होकर चला गया। तब लिखा है, कि यीशु ने उसे जाते देख अपने चेलों से कहा कि जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है। क्योंकि ''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से होकर निकल जाना सहज है।'' (मरकुस 10 : 25)।

इसी की तरह बाइबल में हमें एक दूसरा उदाहरण एक और धनवान मनुष्य के बारे में मिलता है। जबकि पहिले उदाहरण में हमने विशेष रूप से इस बात को देखा कि वह मनुष्य सब से अधिक अपने धन से प्रेम करता था। इस उदाहरण में हम इस बात को देखते हैं कि इस मनुष्य का सारा भरोसा अपने धन पर था। यह शिक्षाप्रद दृष्टान्त यीशु ने लोगों को उस समय दिया, जब वह उन्हें लोभ के विषय पर उपदेश दे रहा था। वह उन्हें यह बता रहा था, कि चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता। और फिर उसने कहा, '' कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं? क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उसने कहा; मैं यह करूंगा: मैं अपनी बखारियां तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊंगा; और वहां अपना सब धन और सम्पत्ति रखूंगा और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा : तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?'' सो, यीशु ने कहा ''ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।'' (लूका 12 : 16-21)।

अब यहां, इस दृष्टान्त में हमारे सामने एक ऐसा मनुष्य है जो अपने भविष्य को अपने धन से सुरक्षित करने की सोच रहा था। उसने अपना सारा समय धन बटोरने में लगा दिया। और जब उसने बहुत सारा धन इकट्ठा कर लिया, तो उसने सोचा कि अब वह पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। परन्तु तभी उसको परमेश्वर का यह संदेश मिला कि आज ही रात को तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तू ने बहुत कुछ इकट्ठा किया है, परन्तु अब यह सब कुछ किसका होगा? प्रभु यीशु के इस दृष्टान्त से जिस मुख्य पाठ को हम सीखते हैं वह बिल्कुल साफ हैं। अर्थात, जिस मनुष्य का भरोसा धन-सम्पत्ति पर है वह एक बहुत भारी धोखे में है। क्योंकि वह सोचता है कि वह इस पृथ्वी पर सदा बना रहेगा। परन्तु जिस दिन उसका प्राण उससे ले लिया जाएगा उस दिन न केवल वह अपने धन को ही खोएगा, किन्तु अपनी आत्मा को भी खो देगा।

और अब, धन के धोखे के सम्बन्ध में, मैं आपका ध्यान इसी तरह के एक और उदाहरण पर दिलाना चाहता हूं। प्रभु यीशु ने इस सम्बन्ध में यूं कहा, ''एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी वस्त्र और मल-मल पहिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। और लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेंज पर की जूठन से अपना पेट भरे; बरन कुत्तें भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि कंगाल मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और उसने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं, परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है और तू तड़प रहा है।'' (लूका 16 : 19-25)।

यह धनवान अधोलोक की आग में क्यों तड़प रहा था? क्या इसलिये क्योंकि वह धनी था? जी नहीं ! परन्तु वास्तव में वह वहां इसलिये था क्योंकि उसने अपने धन और अपनी आशीषों का उचित उपयोग नहीं किया। उसके पास इतना अधिक धन था कि वह प्रतिदिन बहुमूल्य कपड़े पहिनता था, सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। परन्तु कंगाल लाजर की ओर उसका कभी इतना ध्यान तक भी नहीं गया कि वह उसके घावों पर पट्टियां बन्धवा दे, या उसकी कुछ सहायता कर दे। उसे उसकी मेज पर से गिरे जूठन के टुकड़े भी कठिनाई से मिल पाते थे, परन्तु वह सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। जब हम अपने धन का उचित उपयोग नहीं करते तो हम उसका दुरूपयोग करते हैं।

लेकिन इससे पहिले कि आप आज के पाठ से यह निष्कर्ष निकाल लें कि ये सब बातें तो केवल धनी लोगों के लिए ही हैं। मैं आप से यह अवश्य कहना चाहूंगा, कि यदि जगत में कोई भी ऐसी वस्तु है जिससे हम परमेश्वर से भी अधिक प्रेम करते हैं तो वही

हमारा धन है। शायद वह पैसे के स्थान पर विद्या ही या कोई मनुष्य हो, या कोई और वस्तु हो। यदि हम परमेश्वर और अनन्त जीवन से भी अधिक उसे चाहते हैं तो वह उस धन के समान है जिसके धोखे में आकर हम अपने आप को खो बैठेंगे। इसी प्रकार, यदि कोई ऐसी वस्तु है जिसके ऊपर हमारा भरोसा परमेश्वर से भी अधिक बढ़कर है तो हम एक बहुत बड़े धोखे में हैं। क्योंकि इस जगत में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो हमारे प्राणों का उद्धार कर सकती है। हमें केवल परमेश्वर ही बचा सकता है, और सब कुछ छोड़कर एक दिन हमें उसी के पास जाना हैं और तीसरे स्थान पर मैं आपसे यह कहना चाहूंगा कि आप का धन आपका समय है। आपकी आंखें और आपकी जुबान, आपके हाथ और आपके पैर ये सब आपका धन है जिसे परमेश्वर ने आपको दिया है। आप इन सब आशीषों को कैसे इस्तेमाल कर रहे हैं? हमें चाहिये कि हम अपनी प्रत्येक आशीष को और प्रत्येक योग्यता को और जो कुछ भी हमारे पास है उस सब को परमेश्वर की महिमा और बड़ाई के लिये इस्तेमाल करें। क्योंकि जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है, एक दिन हमें अवश्य ही उस सब का लेखा देना पड़ेगा। (2 कुरिन्थियों 5:10)।

क्या आप अनन्त जीवन पाना चाहते है? क्या आपको वास्तव में अपने जीवन की सुरक्षा की चिन्ता है? क्या आप स्वर्गीय जीवन के आनन्द में शामिल होना चाहते हैं? परमेश्वर के पुत्र यीशु में विश्वास कीजिए, और अपने पापों से मन फिराकर अपने सारे पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लीजिए। परमेश्वर का भय मानिये और उसकी सारी आज्ञाओं का पालन कीजिए।

कलीसिया की स्थापना

जे. सी. चोट

पिछले पाठ के अध्ययन में, यशायाह 2:2, 3; योएल 2:28, 29, और दानिय्येल 2:44 से हमने देखा कि प्रभु के राज्य अर्थात् कलीसिया की स्थापना अन्त के दिनों में, यरूशलेम में, सामर्थ के आने पर होगी, व हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे, और उसका अन्त कभी न होगा। फिर मत्ती 16: 18; मरकुस 9:1 और लूका 24:46-49 में यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा, व उसका आगमन सामर्थ सहित होगा, और मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार सब जातियों में, उसी के नाम से किया जाएगा। प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय को पढ़कर ज्ञात होता है कि यह सब भविष्यद्वाणियां और प्रतिज्ञाएं इसी अध्याय में पूर्ण हुई।

जब हम प्रेरितों के काम 2 अध्याय को पढ़ते हैं, हम पाते हैं कि प्रेरित इस समय यरूशलेम में थे: "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें

से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई, और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।" (प्रेरितों 2:1-6)। आगे हम पढ़ते हैं उन विभिन्न जाति के लोगों के विषय में जो वहां पर एकत्रित थे, "और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है? परन्तु औरों ने ठट्ठा करके कहा, कि वे तो नई मदिरा के नशे में है। पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालों, यह जान लो और कान लगा कर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी: कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे।" और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों 2: 17,21)।

यह बताने के बाद कि ये सब कुछ जो हो रहा था उन भविश्यद्वाणियों के अनुसार था जो पूर्व की गई थीं, पतरस ने उपदेश देना आरंभ किया। उसने बताया कि यीशु एक मनुष्य था, जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों, और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने उनके बीच उनके द्वारा कर दिखलाए। फिर, उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि वह कैसे पकड़वाया गया और अधर्मियों के हाथों से क्रूस पर चढ़ाया व मारा गया। आगे पतरस ने बताया कि उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर जिलाया। उस बड़े जन-समूह को निश्चय दिलाने के लिये पतरस ने दाऊद का उदाहरण देकर बताया कि मसीह पृथ्वी पर रहा, मर गया, गाड़ा गया और पुनजीर्वित हो उठा, और फिर स्वर्ग में चला गया ताकि सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने हाथ बैठे। इसके साथ ही उसने कहा, "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह है। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं। सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि भाइयो, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल

गए।" और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों 2:32-41, 47)।

पूर्वोक्त विवरण में प्रभु की कलीसिया की स्थापना के विषय में बताया गया है। यहां हम स्पष्टता से देखते हैं कि सब कुछ यरूशलेम में ही घटित हुआ। पवित्र आत्मा की अद्‌भुत शक्ति प्रेरितों पर उंडेली गई। यह पहले से की गई भविष्यद्वाणी के अनुसार था। पतरस ने विशेष रूप से इस पर बल देकर कहा कि, "यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वकता के द्वारा कही गई है।" (प्रेरितों 2:16), इसलिये इसमें कुछ भी संदेह नहीं। इसके अतिरिक्त, भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि यह सब अंत के दिनों में होगा, और यहां पतरस ने कहा कि यह वही हो रहा है जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता ने पूर्व कहा था, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि स्थापना अंत के दिनों में हुई। फिर, उस दिन हर एक जाति के लोग वहां पर उपस्थित थे, व मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार प्रभु यीशु के नाम से किया गया, और लगभग तीन हजार मनुष्यों ने प्रभु का वचन ग्रहण किया, और बपतिस्मा लिया, उन्हें उद्धार मिला, व प्रभु ने उन्हें कलीसिया में मिला दिया। इसलिये, यीशु मसीह ने कलीसिया की स्थापना लगभग 33 ई. स. में की, और तभी से यह आज तक वर्तमान है।

क्या स्त्री उपदेश दे सकती है?

बैटी बर्टन चोट

यदि प्रश्न यह है कि ''क्या स्त्री, मिले-जुले वयस्क लोगों की सभा में जहां पुरूष भी बैठे हों, उपदेश दे सकती हैं?'' तो उत्तर होगा, ''नहीं।'' 1 कुरिन्थियों 14:34-35 तथा 1 तीमुथियुस 2:12-14 में वचन स्त्री को कलीसिया की सभा में पुरूषों पर आज्ञा देने से रोकता है। ''मैं कहता हूं कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरूष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे'' (1 कुरिन्थियों 14:35)।

''उपदेश करने'' से अभिप्राय है मण्डली में भाषण देना। हम सभी अपने सामान्य जीवन में प्रतिदिन कुछ न कुछ उपदेश देते हैं।

हम अपने व्यवहार तथा दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों के द्वारा भी उपदेश देते है। युवा प्रचारक तीतुस को पौलुस ने लिखा कि स्त्रियां अपने व्यवहार में समझदार और पवित्र हों, ताकि ''परमेश्वर के वचन की निंदा न होने पाए'' (तीतुस 2:5)। तीमुथियुस को उसने जवान विधवाओं के लिए निर्देश दिए कि उनके चाल-चलन ऐसे हों जिससे ''किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न'' मिले (1 तीमुथियुस 5:14)। इन निर्देशों से स्पष्ट होता है कि हम सब अपने जीवन का नमूना देकर, अच्छी शिक्षा देकर या फिर परमेश्वर के वचन या उसके लोगों के लिए बदनामी या निंदा का कारण बनकर, उपदेश देते हैं।

<u>विचार करने वाली बात:</u> इस संसार में हम अकेले नहीं रहते हैं। जो कुछ भी हम करते हैं उसे दूसरे लोग देखते हैं और उन पर इसका कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है।

अपने आपको ''मसीह जैसा'' कहलाकर उसके जैसा जीवन न बिताकर हम लोगों को मसीहियत से दूर कर रहे होते हैं। रोमियों 2:14 की यह भविष्यवाणी सही बैठती है, ''क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निंदा की जाती है।''

स्त्रियां प्रतिदिन अपने घर की चारदीवारी में उपदेश देती रहती हैं। यह जानते हुए कि मसीही स्त्रियों के विवाह अविश्वासी पुरूषों के साथ हुए थे, पतरस ने निर्देश दिया: ''हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो। इसलिए कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तोभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं'' (1 पतरस 3:1, 2)।

जहां कहीं केवल पत्नी ही मसीही है, परन्तु पति नहीं, तो वहां पति के उद्धार की उम्मीद केवल उसकी पत्नी के विश्वासी होने के कारण है। यदि पत्नी अपने मसीही जीवन के सम्बन्ध में दुविधा में हैं। आराधना में कभी-कभी जाती है और अपनी आत्मिक उन्नति के लिए या दूसरों को सिखाने की उसे परवाह नहीं है तो वह अपने पति के लिए रूकावट का कारण बन सकती है। उसका अपना व्यवहार भी अपने पति को सुसमाचार की सच्चाई को मानने से रोक सकता है। परन्तु यदि वह स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक इस बात पर जोर दे कि उसके जीवन में पहले परमेश्वर को जगह मिलनी चाहिए तो उसका पति और उसके परिवार के अन्य लोग भी उसके धार्मिक व्यवहार से सीख लेंगे।

<u>विचार करने वाली बात:</u> एक बुजुर्ग दम्पत्ति की कहानी है। दोनों मसीही नहीं थे। पति रौबदार था जबकि पत्नी विनम्र और शालीन स्वभाव की थी। उसने सच्चाई को जानकर सुसमाचार का आज्ञापालन करना चाहा पति उस पर भड़क गया कि अगर उसने बपतिस्मा लिया तो वह उसे तलाक दे देगा। साथ ही उसने वादा भी किया कि वह स्वयं कभी भी बपतिस्मा नहीं लेगा।

अन्त में पत्नी ने अपने पति के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानने की हिम्मत जुटा ली। पहले पहल बहुत ही-हल्ला और शोर-शराबा करने के बावजूद, साल के अन्दर-अन्दर पति का कठोर मन भी पिघल गया और वह मसीही बन गया! सच में, उसकी एकमात्र आशा अपनी पत्नी में थी। यदि वह हिम्मत जुटाकर अपने विश्वास की बात न मानती तो उसके पति को भी आज्ञा मानने वाला कोमल मन न मिलता।

घरों में जो शिक्षा बच्चों को दी जाती है, उसमें से अधिकतर शिक्षा स्त्रियों की ओर से ही होती है। युवा प्रचारक तीमुथियुस के विषय में हम पढ़ते हैं, ''और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस, और तेरी माता यूनीके में थी, और मुझे निश्चय है, कि तुझ में भी है'' (2 तीमुथियुस 1:5)। तीमुथियुस का पिता एक अन्यजाति था, उसे पुराने नियम के पवित्र शास्त्र वाला विश्वास नहीं था, जो मसीह पर विश्वास करने का आधार है। तीमुथियुस की माता और नानी ने उसे परमेश्वर के वचन की सच्चाई बड़ी सावधानी से बचपन में ही दे दी थी।

परमेश्वर के वचन में स्त्रियों के सिखाने के उदाहरण मिलते हैं जिन से पता चलता है कि वे हर समय अपने व्यवहार के द्वारा और घर में सिखाने के लिए स्वतन्त्र थीं। परन्तु क्या स्त्री उन्हें भी सिखा सकती है, जो उसके परिवार के लोग न हों?

प्रेरितों 18:2, 25, 26 में हम अक्विल्ला नामक एक आदमी और उसकी पत्नी

प्रिसकिल्ला के बारे में पढ़ते हैं। वे यहूदी पृष्ठभूमि वाले लोग थे और तम्बू बनाने का काम करते थे और कुरिन्थुस में रहते थे। जब पौलुस कुरिन्थुस में गया था तो वह उन्हीं के पास रूका था। प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला पहले ही मसीही बन चुके थे या उन्हें पौलुस मसीह में लेकर आया था, इस पर वचन कुछ नहीं कहता। परन्तु जब पौलुस कुरिन्थुस से गया तो यह दम्पत्ति इफिसुस तक उसके साथ था। वहां अपुल्लोस नामक एक यहुदी मिला तो, ''विद्वान पुरूष और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से जानता था'' (आयत 24)। ''पर प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला उसे अपने यहां ले गए और उसे परमेश्वर का मार्ग और भी ठीक-ठीक बताया'' (आयत 26)। वचन से पता चलता है कि अपुल्लिास को सिखाने में अक्विल्ला की पत्नी ने साझा प्रयास किया था। निश्चय ही यह सिखाना कलीसिया के सभास्थल में या आराधनालय में नहीं हुआ होगा। बल्कि वे उसे अपने यहां ले गए और घर में उसे अकेले को समझाया। कई जगहों पर घरों में बाइबल की बात करने के मामले मिलते हैं, जहां सिखाने में योगदान देना स्त्री के लिए अच्छा है। इस परिस्थिति में उसका व्यवहार और आचरण बिल्कुल एक मसीही व्यक्ति वाला यानी प्रेमपूर्वक और विनम्रता वाला होना आवश्यक है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह ऐसे जताए जैसे वह ''सब कुछ जानती है'' और न ही क्रोध से भरी हो।

आज के युग में जब बहुत सी पुस्तकें छपी हुई मिल जाती हैं तो कई बार यह प्रश्न खड़ा होता है कि ''क्या पुरूष के लिए किसी स्त्री की लिखी पुस्तक या लेख को पढ़ना गलत बात है?'' यह भी घर में एक व्यक्तिगत अध्ययन के जैसा ही है, अन्तर केवल इतना है कि इसमें लिखे शब्द मुंह के द्वारा बोलने के बजाय छपे हुए होते हैं। इसमें मण्डली में प्रचार करने जैसी कोई बात नहीं है क्योंकि पुरूष को यह स्वतन्त्रता है कि वह इन बातों को चाहे तो पढ़े और चाहे तो न, फिर जिस स्त्री के लेख को वह पढ़ा रहा है उसका उस पर कोई दबाव नहीं होगा कि वह उसकी अगुआई को माने।

क्या स्त्रियां किसी अवसर पर मण्डली में उपदेश दे सकती हैं? बूढ़ी स्त्रियों के लिए पौलुस को निर्देश दिए कि ''वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि वे अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें और संयमी, पतिव्रता और घर का कारबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हों ...'' (तीतुस 2:3-5)। सो इस बात की केवल अनुमति ही नहीं बल्कि आज्ञा है कि स्त्रियां अन्य स्त्रियों को और बच्चों को सिखाएं। ऐसा व्यक्तिगत रूप से घरों में, मण्डली में, छोटे समूहों में, बड़े समूहों में, सेमिनारों में और 'वर्कशापों में' कहीं भी हो सकता है, जहां पुरूष न हों।

यह भी हो सकता है कि कहीं छोटी मण्डलियां हों जिनमें केवल स्त्रियां ही हों। ऐसी परिस्थिति में क्या किया जाए? क्या उन्हें आराधना करना इसलिए छोड़ देना चाहिए, क्योंकि अगुआई करने के लिए उनमें कोई पुरूष नहीं है? नहीं; यदि मण्डली की सभी सदस्य स्त्रियां हैं तो जब तक वहां कोई पुरूष मसीही नहीं है तब तक आराधना करवाने की जिम्मेदारी उन्हीं की होगी।

सो प्रश्न यह नहीं है कि ''क्या स्त्री उपदेश दे सकती है?'' बल्कि प्रश्न फिर से नेतृत्व की भूमिका का है। पुरूषों की सभा में स्त्री को उपदेश देने की आज्ञा नहीं हैं।

मिली-जुली सभा में जिसमें पुरूष ओर स्त्रियां दोनों हो, वहां उपदेश देने के साथ-साथ आराधना की अन्य गतिविधियों में हर बात में अगुआई का काम पुरूषों का है। यह उन्हें परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारी है, और जब वे उस काम को स्त्रियों के साथ में दे देते हैं, चाहे वे कितनी भी ''गुणी'' क्यों न हों, तो वे परमेश्वर ही की आज्ञा को तोड़ रहे होते हैं।

बच्चों, अन्य स्त्रियों, अविश्वासियों को उपदेश देने का काम सचमुच में बड़ा है और इसके लिए समय चाहिए। यदि स्त्रियां इस काम को बखूबी करती हैं तो बहुत से लोग अनन्तकाल में परमेश्वर के साथ रह रहे होंगे जो ऐसा न होने की स्थिति में नाश हो जाते। हमें इस बहस को छोड़कर कि वे क्या नहीं कर सकतीं, यह ध्यान देना चाहिए कि वे क्या कर सकती हैं।

त्रिएक

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

बाइबल में ''त्रिएक'' शब्द का वर्णन तो हमें नहीं मिलता, परन्तु परमेश्वरत्व के बारे में हम अवश्य पढ़ते हैं, और इसका अभिप्राय इस बात से है कि यद्यपि परमेश्वर तो एक ही है परन्तु उस एक परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं। संसार में ऐसे लोग भी हैं जिनका मत यह है कि अनेकों परमेश्वर हैं। परन्तु मसीही लोग केवल एक ही परमेश्वर को मानते हैं। (व्यवस्था. 6:4; मरकुस 12:29; 1 कुरिन्थियों 8:4; याकूब 2:19)। किन्तु उस एक परमेश्वर को हम तीन रूप में मानते हैं, अर्थात, पिता, पुत्र, और पवित्र-आत्मा। और यद्यपि ये तीनों अलग-अलग हैं परन्तु फिर भी तीनों एक हैं। हम यीशु मसीह के बारे में देख चुके हैं कि वोह परमेश्वरत्व में है, और इसलिये वोह परमेश्वर है। (यूहन्ना 1:1; 20:28; फिलिप्पियों 2:6)। और क्योंकि वोह परमेश्वर है इसलिये हम उसकी स्तुति प्रशंसा करते हैं (प्रकाशित. 5:1-14)। और यही बात पिता और पवित्रात्मा के बारे में भी सच है।

पिता परमेश्वर है, अर्थात वोह परम प्रधान है। (1कुरिन्थियों 8:6; गलतियों 1:1; इफिसियों 4:6; 1 पतरस 1:2; यूहन्ना 6:27)। अधिकतर ''परमेश्वर'' शब्द जहाँ बाइबल में आया है तो उसे पिता के लिये ही उपयोग में लाया गया है। परमेश्वर महान है। परमेश्वर के लिये बाइबल में बताया गया है, कि वोह स्वयं ही सर्वसिद्ध है (यशायाह 4:13-14; भजन. 50:12; प्रेरितों 17:25), अनन्त है (भजन 90: 2-4; व्यवस्था 32:40; याकूब 1:17), वोह आत्मा है (यूहन्ना 4:24; व्यवस्था. 4:15; प्रेरितों 17:29), सर्वशक्तिमान है (यशायाह 14:27; भजन. 2:4), सर्वज्ञानी अर्थात सब कुछ जानता हैं (भजन. 147:5), और सर्वव्यापी है (यिर्मयाह 23:23-24; भजन. 139:7-12)। परमेश्वर पिता प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8; भजन. 118:1-29; रोमियों 8:35-39), पवित्र है (यशायाह 6:3-5; भजन. 99:9; प्रकाशित. 15:4), दयावान है (व्यवस्था 4:31;

भजन. 145:8), और धर्मी है (यशायाह 5:16; भजन. 11:7)। परमेश्वर सारे जगत का सृष्टिकर्त्ता, सर्वशक्तिमान है। वोह हम सब के आदर भक्ति और महिमा के योग्य है; जिसकी हमें आराधना और स्तुति करनी चाहिए। (प्रकाशित. 4:1-11; मत्ती 4:10; लूका 4:8; व्यवस्था. 6:13)।

ऐसे ही बाइबल में, पवित्रात्मा को भी परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया है। जैसे कि हम प्रेरितों 5:3-4 में पढ़ते हैं कि हनन्याह ने जब ''पवित्र आत्मा'' से झूठ बोला था तो उसने वास्तव में ''परमेश्वर'' से झूठ बोला था। (1कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19-20)। इसलिये पवित्र आत्मा परमेश्वर है। पवित्र आत्मा में भी वही गुण हैं जो परमेश्वर में हैं (रोमियों 8:2; यूहन्ना 16:13; इब्रानियों 9:14; भजन. 139:7)। पवित्र आत्मा जो करता है वोह काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है (उत्पत्ति 1:2; भजन. 104:30; यूहन्ना 3:8; रोमियों 8:11; 2 पतरस 1:21)। पवित्र आत्मा और परमेश्वर एक ही समान हैं (मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:13) और परमेश्वर की आराधना करना पवित्रात्मा की आराधना करना है। (1 कुरिन्थियों 3:16)। पवित्र आत्मा कोई ''वस्तु'' या ''शक्ति'' नहीं है। वोह आत्मिक व्यक्तित्व है जिससे मनुष्य झूठ बोलकर उसका मन शोकित कर सकता है (प्रेरितों 5:3-4; इफिसियों 4:30)। पवित्रात्मा एक मसीही व्यक्ति के भीतर, उसे पवित्र और मज़बूत बनाने के लिये, रहता है। प्रेरितों 2:38; 5:32; रोमियों 8:9-16,26; 1 कुरिन्थियों 3:16-17; 6:11, 19-20; 12:13; 2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13; 3:14-16; तीतुस 3:5; 1 यूहन्ना 4:13; यहूदा 19)। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों की सहायता करता है और उनके लिये विनती करता है (रोमियों 8:26-27)।

पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, अलग-अलग होने के बावजूद, तीनों मिलकर एक परमेश्वर हैं। (यूहन्ना 10:30; 15:26; मत्ती 28:19; 1 पतरस 1:2; 1 कुरिन्थियों 12:4-6)। इसीलिये पौलुस ने तीनों का वर्णन एक ही जगह करके यूं कहा था: ''प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सबके साथ होती रहे।'' (2 कुरिन्थियों 13:14) हम परमेश्वर को त्रिएक इसलिए मानते हैं क्योंकि वोह एक तो है पर तौभी उसके तीन अलग अलग व्यक्तित्व हैं। परमेश्वर तीन नहीं है, परमेश्वर केवल एक ही है। पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा तीन अलग-अलग परमेश्वर नहीं हैं, परन्तु वे एक ही परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं। यह बात समझने में हमें अटपटी अवश्य लगती है, और कदाचित इसे पूरी तरह से हम समझ भी नहीं सकते। अर्थात एक ही परमेश्वर के तीन अलग-अलग व्यक्तित्व कैसे हो सकते हैं? यह समझना हमारे लिये कठिन है। पर हम मनुष्य हैं। हमारे सोच-विचार सीमित हैं। हम परमेश्वर की तरह नहीं सोच सकते। हम सीमित हैं। परमेश्वर असीमित है। वोह एक होकर भी त्रिएक है। वोह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है।

परमेश्वर के प्रति धन्यवादी

अर्ल डी ऐड्वर्डस

परमेश्वर के साथ हमारा संबंध हमारे धर्म और जीवन का आधार है। केवल परमेश्वर में ही हमें पूर्णता से जानने और हमें जो मिलना चाहिए वह देने का ज्ञान, सामर्थ्य और प्रेम है। परमेश्वर के मार्गों के अनुसार उसे प्रतिक्रिया देना ही हमारे लिए तथा उसके एवं दूसरों के साथ हमारे संबंधों के लिए सर्वोत्तम होता है।

1 थिस्सलुनीकियों का पहला भाग पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस के थिस्सलुनीकियों की कलीसिया और मसीह में परमेश्वर के साथ उनके बीते समय के तथा वर्तमान संबंधों के बारे में है। पहले तीन अध्यायों में केवल समाचार ही है और कोई आज्ञा या सैद्धांतिक व्याख्या नहीं है। ये अध्याय केवल इतना बताते हैं कि पहले क्या हो चुका है और अब क्या हो रहा है। ये संबंधित लोगों के परस्पर संबंधों में केवल अच्छे समाचार के बारे में ही बताते हैं।

किसी भी अन्य व्यक्तिगत पत्र के समान, 1 थिस्सलनीकियों उन घटनाओं पर केन्द्रित है जो लेखक और पाठकों के मध्य संबंध बनने का आधार बनीं। इस पत्री और उन पत्रियों के बीच जो नए नियम से बाहर की है, अंतर यह है कि यह पत्री परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई है इसलिए पूर्णतया सत्य है। यह हमारे व्यवहार में परमेश्वर को भावते हुए संबंध विकसित करने के लिए नमूने का भी कार्य करती है। ये घटनाएं वास्तव में घटित हुई, और परमेश्वर ने इस पत्री को बचा कर रखा है क्योंकि वह चाहता है कि हम इन सत्यों को जान सकें और इनके द्वारा हमारे जीवन आशीषित हों।

इसलिए, यह एक उद्देश्यपूर्ण समाचार है। यह हमारे मसीही जीवनों में अन्तर लाने वाला समाचार है। यह हमें नया कर देने वाला समाचार है। इस समाचार से हम धन्यवादी जीवन रखने के लिए क्या शिक्षा ले सकते हैं?

परमेश्वर का अंगीकार करें (1:1)। परमेश्वर ने सदा ही हमें अपनी रचना स्वीकार किया है। प्रत्युत्तर में हमें भी उसे अपना रचियता मान लेना चाहिए। हमारे लिए कितना आवश्यक है कि हम परमेश्वर के प्रति निरंतर सचेत रहें, उसके अस्तित्व के प्रति सचेत, उसके चरित्र, हमारे प्रति उसके विचार, और उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया के लिए उसकी लालसाओं के लिए सचेत।

जब हम मसीही नए नियम की पत्रियों के आरंभ को पढ़ते हैं, तो हमें वे सब एक समान प्रतीत हो सकती हैं। हम अकसर पहली कुछ आयतों को पढ़ते समय सोचते हैं कि ये शब्द तो जाने-पहचाने हैं और सरलता से समझे जा सकते है। हो सकता है कि विस्तार से उनका अध्ययन करने या उन पर मनन करने का कोई विशेष महत्व हमें दिखाई दे।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर का लिखित प्रकाशन है। केवल यहीं पर हमें परमेश्वर जो चाहता है उसकी प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। केवल यहीं हमें अपने जीवनों के लिए सही मार्गदर्शन मिलता है। इसलिए, 1 थिस्सलुनीकियों को एक जाने-पहचाने आरंभ प्राचीन पत्री के समान देखने के स्थान पर, हमें इसे परमेश्वर

मसीहियों से जो चाहता है उसे जानने का अवसर समझना चाहिए। ये वचन इसलिए लिखे गए क्योंकि परमेश्वर चाहता था कि वे कहे जाएं और क्योंकि परमेश्वर जानता था कि ऐसी परिस्थिति के लिए ही वे ही सबसे उपयुक्त वचन हैं। ये परमेश्वर के कथन हैं–थिस्सलुनीकियों से और हम से।

मसीही लेखकों और पाठकों के लिए, वाक्यांश परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में (1:1) हमें स्मरण दिलाता है कि हमारा सारा जीवन उस पर निर्भर है, क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं (प्रेरितों के काम 17:28अ)। मसीही जी सकते हैं, वार्तालाप कर सकते हैं, कार्य कर सकते हैं इस यथार्थ के साथ कि परमेश्वर हमारे साथ है, हमारे बगल में है, और हमारे अन्दर है। परमेश्वर और यीशु का निरंतर बोध रहना हमें प्रतिदिन ईश्वरीय जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित तथा प्रेरित करता है। पौलुस ने यह व्यक्त किया जब उसने कहा, क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है (फिलिप्पियों 1:21अ) और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है (गलातियों 2:20ब)।

हम परमेश्वर के साथ जीवन जीने का, दिन के प्रत्येक घंटे उसकी उपस्थिति में होने का यह बोध कैसे विकसित कर सकते हैं? हम इसके विषय अपने मसीही भाइयों और बहनों को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? थिस्सलुनीकियों वाले ऐसा करने के लिए अन्य देवताओं से अलग हो गए थे (1:9) उन्होंने परमेश्वर के वचन की सत्यता को स्वीकार किया (2:13), जो मसीह के अनुयायी थे उनका अनुकरण किया (2:14), और विश्वास, आशा तथा प्रेम पर अपने कार्य की प्रेरणा के लिए ध्यान केन्द्रित किया (1:3)।

परमेश्वर अपने लोगों के लिए क्या चाहता है? पौलुस का प्रथम विचार था कि वह भाइयों के प्रति अनुग्रह और शांति व्यक्त करे (1:1)। लेखक के मन में प्रभावी अधिकार रखने वाला विचार था कि वह थिस्सलुनीकियों को बताए कि परमेश्वर तथा वह स्वयं उनके बारे में क्या विचार रखते हैं। पौलुस इन तरुण मसीहियों के लिए परमेश्वर का अनुग्रह और शांति चाहता था। थिस्सलुनीकियों के लोग तो अपने लिए कई अन्य आशीषों की इच्छा को रखते तथा पाना चाहते होंगे, परन्तु ये दोनों ही सबसे महान थीं।

इस पुस्तक की प्रथम आयत एक उदाहरण भी है कि मसीही कैसे एक-दूसरे की सहायता कर सकते हैं। पौलुस प्रोत्साहन का पत्र लिख रहा था। थिस्सलुनीकियों ने ऐसे उदाहरण के अनुसरण की कीमत को समझा था और अपने शिक्षकों का अनुसरण करने वाले बन गए थे (1:6)। किसी साथी मसीही को प्रोत्साहित कर पाने के लिए आपको कितने समय तक का मसीही होना चाहिए? यह कार्य तो नए मसीही भी कर सकते हैं?

बाइबल कक्षा में बच्चे अपने माता-पिता को ईश्वरीय प्रोत्साहन देने वाले के रूप में लिख सकते हैं। वृद्ध लोग मण्डली के जवानों के लिए धन्यवाद के शब्द कह सकते हैं यह दिखाने के लिए कि वे उनकी सराहना करते हैं। जो सदस्य किसी दूसरे स्थान पर चले गए हैं उन्हें पत्र भेजे जा सकते हैं यह जताने के लिए कि उनके भले कार्य भुलाए नहीं गए हैं वरन अभी भी सराहे जाते हैं। मसीही अन्य प्रदेशों या देशों में अपने मसीही भाई-बहनों को लिख कर उनके प्रति परमेश्वर के अनुग्रह और देखभाल को व्यक्त कर

सकते हैं।

एक जानी-पहचानी प्रतीत होने वाली आयत में जीवन भर के लिए भली उपयोगिता मिल सकती है। परमेश्वर ने इसकी ऐसी योजना बनाई है कि हम उसे पढ़ें, समझें, और करें।

परमेश्वर को धन्यवाद देना (1:2)। धन्यवादी होना मसीही होने का एक भाग है। पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस धन्यवादी शिक्षक थे। वे परमेश्वर से की गई अपनी प्रार्थनाओं में नियमित रूप से धन्यवाद व्यक्त करते थे, हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते है (1:2)। उनके लिए यह एक शिक्षक के जीवन का महत्वपूर्ण भाग था, परन्तु क्या यह केवल शिक्षकों और प्रचारकों के लिए ही है? यह बहुमूल्य पाठ हम सब के लिए है। प्रत्येक मसीही से कहा गया है कि सदा बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो (इफिसियों 5:20अ)। धन्यवाद एक ऐसा वाक्यांश है जिसका प्रयोग करना सामान्यत: बच्चों को सिखाया जाता है। मसीहियों को धन्यवाद कहना इसलिए नहीं सीखना चाहिए क्योंकि यह शिष्टाचार की अभिव्यक्ति है (और यह शिष्टाचार है), वरन इसलिए क्योंकि यह ईश्वरीय अभिव्यक्त है।

यह धन्यवाद देना नए नियम की पत्रियों में जाना-पहचाना विचार है। क्या यह हमारी प्रार्थनाओं का जाना-पहचाना भाग भी है? क्या हम अपने जीवनों में, परिवारों में, और कलीसिया में धन्यवादी होने के कारणों को ढूंढ़ते हैं? क्या जो अच्छा है उसके बारे में विचार करना और फिर परमेश्वर को धन्यवाद कहना हमारा स्वभाव है? क्या जैसे जब कुछ बुरा होता है तब परमेश्वर से सहायता मांगने के लिए आतुर होते हैं, वैसे ही जब सब अच्छा चल रहा होता है तब उसे धन्यवाद कहने को हम उतने ही आतुर होते हैं? हम ऐसे जन बनें जो सदा परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं।

आयत 2 में क्या हो रहा था? क्या पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस यूं ही धन्यवाद की प्रार्थनाएं कर रहे थे? नहीं, जिनके लिए वे धन्यवाद कर रहे थे, वे उन्हें भी बता रहे थे कि वे धन्यवादी हैं। धन्यवाद की प्रार्थना की योजना परमेश्वर द्वारा रची गई, न केवल उनके प्रति हमारी कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिए, वरन एक दूसरे के साथ अपने संबंधों को विकसित करने के लिए भी जब हम भाइयों के लिए प्रार्थना कर लें, तो उन्हें उसके बारे में बताएं। उन परेशान, निराश, दुर्बल आत्माओं को कितनी सहायता मिलेगी यदि भाई उन से नियमित कहें, मैं आपके लिए प्रतिदिन प्रार्थना कर रहा हूं। नि:संदेह वे फिर कभी नहीं कहेंगे, कोई मेरी आत्मा की चिंता नहीं करता है।

भक्तिपूर्ण जीवनों की सराहना करें (1:3)। धन्यवादी होना वास्तविक होना चाहिए। हमारा धन्यवादी होना, क्या केवल हमारा आज्ञापालन करना है, यह हम वास्तव में उन भले कार्यों को स्मरण कर रहे होते हैं जिन के लिए हम धन्यवादी हो सकते हैं? पौलुस जो विचार रखता था उनसे वह प्रेरित हुआ कि वह थिस्सलुनीकियों के लिए प्रार्थना में कह सके तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता (1:3)। उसने इन मसीहियों के अच्छे कार्यों और रवैये के बारे में

सोचा और फिर प्रार्थना में परमेश्वर से उनके बारे में बात की। मसीही होने के कारण, हमारे विचारों का जीवन हमारे प्रार्थना के जीवन को प्रभावित करेगा। अपनी प्रार्थनाओं को और सुधारने के लिए, हमें अपने विचारों पर ध्यान देना चाहिए।

सामान्यत: हम अपने व्यवहार के प्रशिक्षण के लिए अनैतिक, बुरे और अवैध कामों से बचकर रहना चाहते हैं, और केवल वह करते हैं जो सही है, लेकिन कभी-कभी हम अपने मन के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं। मन का नियंत्रण औरों के द्वारा नहीं वरन स्वयं हमारे द्वारा परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार, बाइबल का विचार है। जब पवित्रशास्त्र हमें कहता है, मनन करो या किसी बात पर अपने मन को विचार करने दो, तो हमें प्रोत्साहित किया जा रहा है कि अपने मनों को अनुशासित या प्रशिक्षित करें कि उससे हमारे विचार और रवैये सुधारे जाएं।

परमेश्वर हम में कैसे विचार चाहता है? भजनकार ने उस धन्य व्यक्ति के बारे में कहा जो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है (भजन 1:2)। पौलुस ने कहा, जो जो बातें सत्य हैं, और जो बातें आदरणीय हैं, और जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं निदान जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो (फिलिप्पियों 4:8)। हमें उस बात का खोजी होना चाहिए जो हमारे साथी मसीहियों के जीवनों में भला है, उन पर विचार करना चाहिए, उसके बारे में प्रार्थना करनी चाहिए, और उन विचारों को औरों के साथ बांटना चाहिए। परमेश्वर ने कहा है कि इससे हमारी और उनकी भलाई होगी, जिनके जीवनों को हम स्पर्श करते हैं।

परमेश्वर के साथ अपने संबंध के बारे में मनन करें (1:4)। परमेश्वर हमारे बारे में क्या सोचता है? हम इसका पता कैसे लगा सकते हैं? आयत 4 पढ़ें, हे भाइयों परमेश्वर के प्रिय लोगों, हम जानते हैं कि तुम चुने हुए हो। यह आयत हमें परमेश्वर के दो विचारों को जो वह थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के बारे में रखता था बताती है, परमेश्वर उन से प्रेम करता था, और परमेश्वर ने उन्हें चुना था। हम जान सकते हैं कि परमेश्वर मसीहियों से प्रेम करता है और उसने हमें चुना है। हम कभी सोच सकते हैं, उस व्यक्ति से प्रेम करना मेरे लिए कठिन है, या संभवत:, उस व्यक्ति को मसीही होने के लिए मैं तो नहीं चुनता। जब कुरिन्थुस की कलीसिया में भाइयों के मध्य विरोध हुआ और उन्हें एक देह होकर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, तो उन से कहा गया, परन्तु सचमुच परमेश्वर ने देह में अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक कर के देह में रखा है (1 कुरिन्थियों 12:18)। जिन्हें परमेश्वर ने अपने परिवार में सम्मिलित किया है वह उनसे प्रसन्न है।

यदि हम परमेश्वर की सेवकाई में खरे हैं, तो हम लोगों के प्रति उसके दृष्टिकोण को स्वीकार करेंगे और उस दृष्टिकोण को अपनाने का प्रयास करेंगे। हम कहेंगे, यद्यपि मैं तो उस व्यक्ति को नहीं चुनता, परन्तु परमेश्वर ने उसे चुना है, और वही सबसे अच्छा जानता है। क्योंकि मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने उसे चुना है, मैं प्रयास करूंगा कि उससे इस के अनुसार व्यवहार करूं। हमें किसी के बारे में यह नहीं सोचना चाहिए कि यह

भाईचारे के व्यवहार के योग्य नहीं है; वरन हमें स्मरण रखना चाहिए कि उसने हमारा उद्धार किया, और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, (तीतुस 3:5अ)। यह स्मरण रखना कि परमेश्वर ने हमें बचाया जबकि हम इसके योग्य नहीं थे हमारी सहायता करेगा कि हम औरों के साथ वैसा व्यवहार ना करें जिसके वे योग्य हैं, वरन वैसा करें जैसा परमेश्वर उनके साथ करता है– दया के साथ।

परमेश्वर के संदेश की प्रतिक्रिया दें (1:5)। परमेश्वर संदेश के द्वारा हम से सम्पर्क करता है। उसने संदेश के द्वारा अपने आप को प्रगट किया है। वह उद्धार का अपना प्रस्ताव संदेश के द्वारा भेजता है। वह उसके लोग होने के कारण हमारा मार्गदर्शन संदेश के द्वारा करता है। हमें उसके संदेश को क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

परमेश्वर के संदेश के बारे में दो विचार हैं। पहला है कि सुसमाचार वचन में होकर आया। दूसरा है कि सुसमाचार सामर्थ्य और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है। परमेश्वर अपने सुसमाचार को फैलाए जाने के बारे में क्या सोचता है इन दोनों ही विचारों से हम पर इसके बारे में कुछ प्रगट होता है।

पहला विचार है कि जब संदेश का प्रचार होता है तब सुसमाचार का प्रसार होता है। यदि सुसमाचार का सही संदेश लोगों के जीवनों तक पहुंचना है, तो परमेश्वर के संदेश को सच्चे और सही शब्दों में सिखाया जाना चाहिए। यदि हम औरों के कथन और जीवनों पर निर्भर रहेंगे, तो संदेश लोगों तक पहुंचेगा वह सिद्ध नहीं होगा। हम यह नहीं कह सकेंगे कि संदेश सिद्ध था कि नहीं। इसलिए, सुसमाचार का प्रचार आवश्यक था और है। सुसमाचार परमेश्वर के बारे में मनुष्य के विचार नहीं है, परन्तु मनुष्य के लिए परमेश्वर का संदेश है। पौलुस ने प्रगट किया कि पवित्र आत्मा ने उसे प्रयोग करने के लिए शब्द दिए जिससे हम परमेश्वर के विचार जान सकें (1 कुरिन्थियों 2:11-13)। जब थिस्सलुनीकियों ने यह संदेश सुना तो उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर, और सचमुच यह ऐसा ही है, ग्रहण किया (1 थिस्सलुनीकियो 2:13)।

सुसमाचार सामर्थ्य और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ भी पहुंचा है। इस विवरण से प्रश्न उठे कि कौन सी सामर्थ्य और उसका प्रदर्शन कैसे हुआ? पवित्र आत्मा ने क्या किया? जो बड़ा निश्चय था वह शिक्षकों का था या श्रोताओं का? आयत 5 का अंतिम भाग इन प्रश्नों के उत्तरों के लिए हमें बहुमूल्य अंतर्दृष्टि देता है। कथन हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे। उस सामर्थ्य, पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय का प्रदर्शन था। जब इन अन्य जाति मूर्तिपूजकों ने शिक्षकों के जीवनों को देखा, तो उससे उन्हें सुसमाचार का पालन करने में सहायता मिली। इसमें ना केवल पवित्र आत्मा द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों की अलौकिक सामर्थ्य सम्मिलित थीं, वरन ईश्वरीय जीवनों की आत्मिक सामर्थ्य भी थी।

जब एक प्रचारक बॉब एबने और अन्य लोग 1993 में अलबानिया गए, तो उन्हें एक जवान पुरुष को सुसमाचार सिखाने का सुअवसर मिला। उस मसीही समूह के साथ अध्ययन करने के पश्चात, उस जवान पुरुष ने कहा, आप अन्य धर्मों से भिन्न हो। जब

बॉब ने उससे पूछा कि यह भिन्नता क्या है, तो उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, आप एक दूसरे से प्रेम करते हैं। यह वह सशक्त संदेश था जो उस व्यक्ति को मसीही जीवनों से मिला था। यीशु ने सुसमाचार के साथ इस प्रेम की सामर्थ्य की प्रतिज्ञा सभी मसीहियों से की है, यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसीसे सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो (यूहन्ना 13:35)। हम यह सुनिश्चित करें कि जब भी वचन की शिक्षा दी जाए तो उसके संदेश का यह प्रदर्शन भी किया जाए।

उपसंहार, अपने भाइयों और बहनों की आत्मिक भलाई के लिए चिंता करना, उनके लिए धन्यवाद के साथ प्रार्थना करना, अपनी प्रार्थनाओं के बारे में उन्हें बताना, और उन्हें परमेश्वर के प्रेम के प्रति आश्वस्त करना, ये सभी परमेश्वर का धन्यवादी अनुयायी होने में सम्मिलित हैं। इन सब बातों को करना हमें तथा औरों को स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर कैसा है और वह अपने लोगों के साथ कैसा व्यवहार चाहता है। जब हम परमेश्वर की सराहना करते हैं, तो उसकी इस सराहना को औरों तक पहुंचाने के लिए ऐसे मार्गों को भी ढूंढ़ेंगे जिनसे उनकी सहायता हो सके। इन आरंभिक मसीहियों की अगुवाई का अनुसरण करें।

मूसा की व्यवस्था

जैरी बेट्स

मूसा की व्यवस्था इस्त्राएल के लोगों को सीनै पहाड़ पर मिली थी। ''इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्त्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही है'' (निर्गमन 19:5-6)। ध्यान दें कि परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को विशेष प्रतिज्ञाएं दी थीं। उसने प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे उसकी बात मानते हैं तो वह उन्हें अन्य सब लोगों से बढ़कर एक विशेष खजाना बनाएगा, ऐसा खजाना जिसकी रक्षा बड़ी सावधानी से की जाएगी। इसका अर्थ हैं कि उन्हें परमेश्वर की विशेष आशीषें प्राप्त होनी थी, सब लोगों ने इस आज्ञा को खुशी खुशी मान लिया। (निर्गमन 19:8)। इस्त्राएलियों की इस वाचा को खुशी खुशी मान लेने के बावजूद हम देखते हैं कि इस्त्राएलियों ने अपने पूरे इतिहास में इस वाचा को जो परमेश्वर के साथ उन्होंने बांधी थी बार बार तोड़ा।

व्यवस्था मिलने के समय इस्त्राएली एक नई जाति थे। हर जाति को व्यवस्था यानी नियमों की आवश्यकता होती है और परमेश्वर ने उन्हें वह व्यवस्था दी जिसके द्वारा उन्होंने अपने जीवन को चलाना था। मूसा को दी गई व्यवस्था में आत्मिक और अस्थाई दोनों नियम थे। अन्य शब्दों में, व्यवस्था में वे दिशा निर्देष थे जिनके उन्होंने एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखने के नियमों के साथ साथ परमेश्वर की आराधना और सेवा करनी

थी। इन नियमों में याजकाई, बलिदान भेंट करने आदि के निर्देषों के अन्य बहुत से नियमों के साथ साथ दस आज्ञाएं भी थीं। यह नियम केवल यहूदियों को दिए गए थे न कि अन्यजातियों को।

हमें इस पाठ को ध्यान रखना आवश्यक है कि परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था सदा तक देने के इरादे से कभी नहीं दी। यिर्मयाह के लेखों के द्वारा परमेश्वर ने कहा, ''फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्त्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धुंगा'' (यिर्मयाह 31:31)। जब कोई नई वाचा या समझौता किया जाता है तो पुरानी वाचा या समझौता स्वत: ही रद्द हो जाता है। यह नई वाचा पुरानी वाचा के साथ जोड़ी नहीं गई है बल्कि यह नई वाचा पुरानी वाचा के स्थान पर दी गई है। यह नई वाचा मसीह की व्यवस्था है जिसे क्रूस पर अपनी मृत्यु के समय मसीह ने बांधा।

मूसा की व्यवस्था के उद्देश्य

कुछ पल के लिए आइए मूसा की व्यवस्था के उद्देश्य पर गौर करते हैं। लोग अक्सर हैरान होते हैं कि परमेश्वर ने शुरू में भी वह व्यवस्था क्यों नहीं दे दी जिसे वह सब लोगों को देना चाहता था। ऐसा क्यों कि उसने पहले एक व्यवस्था दी और फिर उसकी जगह एक और दे दी।

व्यवस्था का एक उद्देश्य पाप की गम्भीरता को समझाना था। मनुष्य का स्वभाव पाप की गम्भीरता को कम कर देने का है। यह हमारे चारों ओर होता है इसलिए हमारे लिए यह कोई बड़ी बात नहीं लगती। खासकर ''छोटे छोटे'' पापों पर विचार करते हैं। परन्तु पवित्र परमेश्वर किसी भी पाप के साथ सहभागिता या मेल नहीं रख सकता। हबक्कूक नबी ने इस बात को समझा जब उसने हबक्कूक 1:13 में लिखा: ''तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; फिर तू विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता, और जब दुष्ट निर्दोष को निगल जाता हैं, तब तू क्यों चुप रहता है?'' इस प्रकार व्यवस्था का एक उद्देश्य मनुष्य को यह समझने में सहायता करना था कि पाप क्या है और यह कितना गम्भीर है। रोमियों 3:20 में लिखा ''क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है'' और रोमियों 7:7 में उसने लिखा, ''तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप हैं? कदापि नहीं! वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता : व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता।''

एक और उद्देश्य लोगों को मसीह तक लाना था। व्यवस्था को यीशु मसीह के आने के लिए एक लोग और एक जाति को तैयार करने के लिए बनाया था जो सब लोगों के लिए उद्धार ला सकता था। ''इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुचाने को हमारा शिक्षक हुई, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे'' (गलतियों 3:24-25)। शिक्षक या स्कूल मास्टर वह होता है जो बच्चों को स्कूल तक ले जाता है जहां उन्हें शिक्षक द्वारा चढ़ाया जाता है। शिक्षक पर उसका अधिकार उनके घर से जाने सेल लेकर उनके शिक्षक तक पहुंचने के बीच तक के समय तक केवल थोड़ी देर का होता हैं जिसमें बच्चे उस शिक्षक के अधिकार में होते हैं इस

प्रकार पुरानी व्यवस्था को उत्तम गुरू यानी यीशु तक लाने के लिए तैयार किया गया था। रोमियों 10:4 में इस विचार को और विस्तार से दिखाया गया है जिसमें पौलुस बताता है, ''क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिये धार्मिकता के निमित मसीह व्यवस्था का अन्त है।''

व्यवस्था का एक अंतिम उद्देश्य की बात करेंगे वह यह है कि व्यवस्था को आने वाली उत्तम बातों की छाया बनने के लिए बनाया गया है। इब्रानियों की पुस्तक विशेष इस विचार को बताती है। ''क्योकि व्यवस्था जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते है, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।'' (इब्रानियों 10:1)। छाया पेड़ की परछाई जैसी होती हैं। यह असल चीज ही हलकी सी झलक देती है। वास्तव में उस असल से बहुत कम होती है। इस प्रकार व्यवस्था को सिद्ध बलिदान की आवश्यकता के लिए लोगों को सिखाने के लिए दिया गया था। जिसमें हमारे पापों के लिए लहू का बलिदान देने के लिए मसीह ने आना था। पुरानी वाचा के याजक केवल स्वर्गीय वास्तविकताओं की नकल या छाया थे।

व्यवस्था को मनुष्य के लिए मसीह को ग्रहण करने, आने के उसके उद्देश्य को बेहतर ढंग से समझने और सबसे बढ़कर उद्धारकर्त्ता की हमारी आवश्यकता को समझाने के लिए दिया गया था। अगले पाठ में हम उस वाचा को देखेंगे जिसे परमेश्वर ने यीशु मसीह के आने के साथ मनुष्य को बांधा।

हम क्रूस पर चढ़ाए मसीह का प्रचार करते हैं

रॉन ब्रायल

सुसमाचार में मसीह का क्रूस सबसे महत्वपूर्ण है। छुटकारे की पूरी योजना मनुष्य के पापों के लिए मसीह की मृत्यु के तथ्य पर ही टिकी है। फिर भी क्रूस का प्रचार पहली सदी के श्रोताओं के लिए ठेकदार का कारण था। क्रूस पर चढ़ाया गया मसीहा समय के उस काल में यहूदियों और यूनानियों दोनों की सोच के विपरीत था।

क्रूस पर चढ़ाए गए मसीहा का प्रचार करने का अर्थ यहूदियों की पूर्णधारणा में खलबली पैदा करना और बहस को बढ़ावा देना था (देखें प्रेरितों 26:23)। यहूदी लोग विजयी मसीहा की उम्मीद जो दाऊद और सुलैमान के समय के राज्य की शान थी उसको लौटा पाए। यहूदी व्यक्ति के लिए इस दावे का खण्डन करने के लिए कि यीशु ही मसीहा है, क्रूस ही काफी था। यहां पर यहूदी व्यक्ति के लिए यह जानने से पहले अशुद्ध होना आवश्यक था। यहूदी लोग चिन्ह् मांगते थे, परन्तु उनके लिए चिन्ह् को देखने के लिए अपनी आंखों को खोलना आवश्यक था (रोमियों 1:3, 4)।

अन्य जातियों के लिए भी समझने के लिए भुलाना आवश्यक था, परन्तु थोड़ा अलग ढंग से। वे किसी भी सिस्टम के लाभों और हानियों को तौलने के लिए तैयार

थे मगर उनमें यह समझ नहीं थी, जो उन्हें मसीह में विश्वास दिला सकती। यहूदी और यूनानी दोनों की एक मान्यता थी जो उनके लिए क्रूस पर दिए उद्धारकर्ता को मानने में बाधा थी।

परन्तु मसीह का प्रचार करना आसान नहीं था। क्योंकि यीशु के प्रचार में विजेता के रूप में यहूदियों को खुश करने और दार्शनिक के रूप में अन्यजातियों को खुश करने के लिए कुछ नहीं था। उसका प्रचार क्रूस पर यीशु नासरी के रूप में किया जाना था।

क्रूस पर दिए मसीह का प्रचार मनुष्य की ओर से नहीं है। यह परमेश्वर की ओर से है। क्रूस में भी मनुष्यजाति के उद्धार के लिए परमेश्वर का बड़ा दर्शन असल में आता है। परमेश्वर की सामर्थ और समझ (1 कुरिन्थियों 1:18-20; रोमियों 1:16, 17) अपने आपको इस प्रकार से दिखाते हैं जो मनुष्यों के पहले से मान लिए गए मापदण्डों से मेल नहीं खाते, और हर बात में परमेश्वर का तरीका ऐसे मापदण्डों से आगे होता है। उद्धार पाने वालों के लिए क्रूस का प्रचार परमेश्वर की समझ भी है और सामर्थ भी (1 कुरिन्थियों 1:18-31)।

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

आपने कुछ लोगों को कहते सुना होगा, कि मसीह की कलीसिया के लोग पुराने नियम पर विश्वास नहीं करते। किन्तु यह बात सच नहीं है। पुराने नियम के प्रति व्यवहार के विषय में दो प्रकार के मत हैं। कुछ लोगों का विचार है कि बाइबल का पुराना नियम और नया नियम दोनों ही एक समान माने जाने चाहिए। उनका मत है कि बातों को मानकर ही मनुष्य को उद्धार मिलेगा। जो लोग इस तरह कहते हैं, कि उनके विचार में मसीह की कलीसियाएं पुराने नियम का आदर नहीं करती हैं। दूसरा मत यह है कि आज हमें पुराने नियम की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। वे सोचते हैं कि पुराने नियम के पढ़ने की भी कोई आवश्यकता आज नहीं है। क्योंकि, वे कहते हैं कि पुराना नियम अब समाप्त हो चुका है और अब हम नए नियम में रहते हैं, सो पुराने नियम को क्यों पढ़ा जाए? इस विषय में अब हम परमेश्वर की इच्छा को देखेंगे।

सबसे पहले हम यह देखते हैं कि पुराने नियम की व्यवस्था को परमेश्वर ने समाप्त कर दिया है। रोमियों 7:4 में इस संबंध में हम यह पढ़ते हैं कि तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए 'फिर, पौलुस ने गलतियों 3:18 में यूं कहा था तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिसकी प्रतिज्ञा दी गई थी, वह वंश, गलतियों 3:16 के अनुसार मसीह था। और अब गलतियों 3:24-25 पर ध्यान करें, जहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं, इसलिये व्यवस्था मसीह के पहुंचाने को हमारी शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।

परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो अब हम शिक्षक के आधीन न रहे। फिर इफिसियों 2:15 में यूं लिखा है, और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, और कुलुस्सियों 2:14 में लिखा है कि विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। इसी अध्याय के 16 पद में लेखक यूं कहता है, इसलिये खाने-पीने पर्ब्ब या नए चांद या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। और अगले पद में वह आगे यूं कहता है क्योंकि ये सब आने वाली बातों की छाया है। और गलतियां 5:4 में पौलुस यूं कहता है कि तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहराना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो। नए नियम की इब्रानियों नाम की पत्री विशेष रूप से इसी तथ्य को प्रमाणित करने के लिये लिखी गई थी, कि अब पुराने नियम की व्यवस्था का लोगों पर कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मसीह के क्रूस पर मरने के बाद अब उसका नया नियम लागू हो चुका है। पुराना नियम परमेश्वर की व्यवस्था थी, किन्तु नया नियम आज मसीह की व्यवस्था है।

केवल सुनने वाले नहीं

सूज़ी फ्रैड्रिक

एक बार यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि वे केवल परमेश्वर की इच्छा को सुनने वाले ही नहीं, बल्कि उसकी इच्छा को पूरा करने वाले बने। यीशु ने कहा था, ''इसलिये जो कोई मेरी यह बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आई, और आन्धियां चली, और उस घर से टकराई, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आई, और आन्धियां चलीं, और उस घर से टकराई और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।'' (मत्ती 7:24-27)। ऐसा देखने में आता है कि बहुत सारे लोग बाइबल की शिक्षाओं को सुनना तो चाहते हैं परन्तु बहुत कम हैं जो उनको मानना चाहते हैं।

प्रेरित पौलूस अथेने नामक स्थान पर बहुत सारे लोगों से एक दिन बात कर रहा था। यह लोग बड़े ध्यान से उसे सुन रहे थे क्योंकि वे बड़ी उत्सुकता से नई बातों को जानना चाहते थे। पौलूस उनसे एक सच्चे परमेश्वर के विषय में तर्क-वितर्क करता है। उसने उन लोगों को यह भी बताया कि उद्धार पाने के लिये परमेश्वर उनसे क्या चाहता है। वहां कुछ लोग ऐसा भी सोच रहे थे कि पौलूस मूर्खता की बातें सिखा रहा है। परन्तु कुछ लोग बहुत उत्सुक थे तथा इन बातों के विषय में और जानना चाहते थे। कुछ ऐसे भी थे जो पौलूस की इन बातों को सुनते रहे तथा उन्होंने विश्वास किया। (प्रेरितों 17:16-34)। बाद में पौलूस कुरिन्थुस में गया तथा ''वहां आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने

समेत प्रभु पर विश्वास किया, और बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 18:8)।

आप इन लोगों में से किन्हें अपने जीवन का उदाहरण बनायेंगे? क्या परमेश्वर की इच्छा के विषय में आप केवल सुनना चाहेंगे, या उसकी आज्ञा को मानेंगे? क्या आप परमेश्वर की इच्छा को जानकर उसको मानेंगे ताकि आप अनन्त जीवन प्राप्त कर सकें?

परमेश्वर द्वारा प्रेरित, याकूब लिखते हुए कहता है, ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।'' (याकूब 1:22)।

आज अधिकतर लोग यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उनका यह विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु अधिकतर लोग यह विश्वास करते हैं कि उद्धार केवल विश्वास से होता है। परन्तु आप सबको गलतियों 3:26-27 पढ़ने की आवश्यकता है, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' बिना बपतिस्मा लिये हुए प्रभु यीशु को नहीं पहिना जा सकता। यदि आपने अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है, तो आपने मसीह को नहीं पहिना है। पतरस कहता है, ''और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है। (1 पतरस 3:21)।

ऊपर को या नीचे को?

जॉन रीस

संसार के धर्म सिद्धता या ''परमेश्वर'' को पाने के किसी विचार तक पहुंचने की कोशिश करते हैं। वे मानते हैं कि परमेश्वर बड़ा और महान है। इसीलिए परमेश्वर तक पहुचने के लिए मनुष्य के लिए किसी न किसी तरह से उस तक पहुंचना आवश्यक है। ऊपर की ओर लगी ''सीढ़ी'' के कई पायदान हैं यानी कई नियम कायदे और अच्छे कर्म हैं जिन्हें किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार से लोग खुद को ''इतना अच्छा'' दिखाने की कोशिश करते हैं जिससे वे परमेश्वर की उपस्थिति में पहुंच सकें।

इसमें कम से कम दो बड़ी समस्याएं हैं। पहली उनके पास यह सुनिश्चित करने का कोई और ढंग नहीं है कि उनके नियम ही सही नियम हैं। वे यह पक्का कैसे बता सकते हैं कि उनकी सीढ़ी ऊपर को जा रही है या नीचे को? दूसरा, लोग गिरते रहते हैं। सीढ़ी इतनी ऊंची है कि बढ़िया से बढ़िया कुशल चढ़ने वाला कभी न कभी फिसलकर गिर ही जाता है। वह पायदानों को यानी नियम कायदों को तोड़ देता है। यह काल्पनिक सीढ़ी परमेश्वर तक पहुंचने का एकमात्र ढंग लगती है इसलिए धर्म की यह किस्म लोगों को दुखी, दोषी और परमेश्वर से दूर होने का अहसास कराती है।

यह सच है कि उनका ढंग कभी काम नहीं करता। एक छोटा सा प्रयोग करने

का प्रयास करें: अपने पैरों के पंजों पर भार डालते हुए जमीन से एक इंच ऊंचा उठने की कोशिश करें। आप नहीं उठ सकते। जब आप एक इंच ऊंचा नहीं उठ सकते तो फिर अपने आपको स्वर्ग तक ऊंचा कैसे उठा रहे थे?

बाइबल की मसीहियत मनुष्य की बनाई हुई संस्थाओं से अलग है। यह हमारे पापी होने और हमारे निर्बलता होने का सामना करती है। यह हमें सिखाती है कि हम खुद को स्वर्ग में नहीं लेकर जा सकते। यह कहती है कि हम में से कोई भी ''इतना अच्छा'' नहीं है कि पवित्र अर्थात प्रतापी परमेश्वर के सामने आ सके। ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। ... इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है'' (रोमियों 3:10, 23)। इसलिए मनुष्यजाति के लिए एकमात्र आशा यही है कि परमेश्वर खुद नीचे आए और हम को बचा ले।

अपनी बड़ी करूणा में परमेश्वर ने ऐसा ही किया है। उसने स्वर्ग से पृथ्वी पर अपने एक अंश अर्थात अपने पुत्र को भेज दिया। ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। ... और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा'' (यूहन्ना 1:1, 14)।

नरक में जाने के दस कारण

1. वहां जाने के लिए कुछ करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
2. आपको वहां पर बुरी संगति आराम से मिल जाएगी।
3. हर समय परमेश्वर की नजर आप पर नहीं रहेगी।
4. आपसे बाइबल अध्ययन या आराधना करने की उम्मीद नहीं की जाएगी।
5. आपको अपनी कोई चीज या धन परमेश्वर को देने की आवश्यकता नहीं है।
6. आपसे शुद्धता और भलाई की उम्मीद नहीं की जाएगी।
7. कोई विश्वासी आपसे परमेश्वर के मार्ग पर चलने को नहीं कहेगा।
8. आप अकेले नहीं होंगे। मित्र और प्रियजन जो आपके पीछे चलते थे वे भी वहीं होंगे।
9. न्याय की कोई चिंता नहीं रहेगी। सब खत्म हो जाएगा। आपको केवल अनन्तकाल के लिए दण्ड मिलेगा।
10. मसीह के दोबारा आने की कोई चिंता नहीं होगी। वह दोबारा फिर कभी नहीं आएगा।